सोमवार प्रदोष व्रत कथा

सोमवार प्रदोष व्रत कथा के अनुसार एक नगर में एक ब्राह्मणी रहती थी जिसके पति की मृत्यु हो गई थी। अब उसका कोई आश्रयदाता नहीं था, इसलिए सुबह होते ही पुत्र के साथ भीख मांगने निकल पड़ती थी। लोगों से भीख मांगकर ही वह स्वयं व पुत्र का पेट पालती थी। एक दिन ब्राह्मणी जब घर लौट रही थी तो उसे एक लड़का घायल अवस्था में मिला। ब्राह्मणी उसे घर ले आई। वो लड़का विदर्भ का राजकुमार था। शत्रुओं ने उसके राज्य पर आक्रमण कर उसके पिता को बन्दी बना लिया था और इसलिए वह मारा-मारा फिर रहा था।

राजकुमार ब्राह्मणी के घर रहने लगा। एक दिन अंशुमति नामक एक गंधर्व कन्या ने राजकुमार को देखा और उसे उससे प्यार हो गया। अगले दिन अंशुमति अपने माता-पिता को राजकुमार से मिलाने लाई। उन्हें भी राजकुमार पसंद आ गया। अंशुमति के माता-पिता को भगवान शंकर ने सपने में आदेश दिया कि राजकुमार और अंशुमति का विवाह करा दो। फिर दोनों ने वैसा ही किया। ब्राह्मणी नियमित प्रदोष व्रत करती थी। उसके व्रत के प्रभाव और गंधर्वराज सेना की सहायता से राजकुमार ने शत्रुओं को खदेड़ दिया और राज्य को पुनः प्राप्त कर वह आनन्दपूर्वक रहने लगा। इसके बाद राजकुमार ने ब्राह्मण-पुत्र को अपना प्रधानमंत्री बनाया। ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत के माहात्म्य से जैसे राजकुमार और ब्राह्मण-पुत्र के दिन फिरे, वैसे ही शंकर भगवान अपने सभी भक्तों के दिन फेरते हैं।